



73वीं गणतंत्र दिवस परेड 73rd Republic Day Parade

26 जनवरी 2022 (6 माघ, 1943)
26 January 2022 (6 Magha, 1943)

कार्यक्रम

1024 बजे राष्ट्रपति का राजकीय सम्मान सहित आगमन।

प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति की अगवानी।

प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति से रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, तीनों सेनाध्यक्षों तथा रक्षा सचिव का परिचय।

राष्ट्रपति तथा प्रधान मंत्री का मंच की ओर प्रस्थान।

राष्ट्र-ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षक राष्ट्रीय सलामी देते हैं। बैंड द्वारा राष्ट्रगान की प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।

गणतंत्र दिवस परेड आरंभ होती है।

सांस्कृतिक झाँकी।

मोटर साइकिल करतब

विमानों द्वारा सलामी।

राष्ट्रीय सलामी।

राष्ट्रपति का राजकीय सम्मान सहित प्रस्थान।

PROGRAMME

1024 hrs The President arrives in State.

The Prime Minister receives the President.

The Prime Minister presents to the President, Raksha Mantri, Raksha Rajya Mantri, the three Service Chiefs and Defence Secretary.

The President and the Prime Minister proceed to the rostrum.

The National Flag is unfurled and the President's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.

The Republic Day Parade commences.

The Cultural Pageant.

Motor Cycle Display

Flypast.

National Salute.

The President departs in State.

परेड क्रम

हेलीकॉप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर

परेड उप-कमांडर

परमवीर चक्र तथा अशोक चक्र पुरस्कार विजेता

THE ORDER OF MARCH

Showering of flower petals by Helicopters

Parade Commander

Parade Second-in-Command

Param Vir Chakra and Ashok Chakra Awardees

सेना

सवार दस्ता

61 घुड़सवार दस्ता

मैकेनाइज्ड दस्ते

सेनच्यूरियन (टैंक मालवाहक पर)

टैंक पीटी-76

एमबीटी अर्जुन एमके I

एपीसी टोपाज (टैंक मालवाहक पर)

बीएमपी-I (टैंक मालवाहक पर)

बीएमपी-II

75/24 गन प्रणाली (एएलएस पर सवार)

धनुष गन प्रणाली

पीएमएस पुल

सर्वत्र पुल

टाटा 2 टन वाहन पर एचटी-16

तरंग शक्ति इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली

टाइगर कैट मिसाइल

आकाश मिसाइल

उन्नत हल्के हेलिकॉप्टरों (एएलएच) द्वारा फ्लाई पास्ट

ARMY

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanized Columns

Centurion (on Tank Transporter)

Tank PT-76

MBT Arjun MK I

APC Topaz (on Tank Transporter)

BMP-I (on Tank Transporter)

BMP-II

75/24 Gun System (Mounted on ALS)

Dhanush Gun System

PMS Bridge

Sarvatra Bridge

HT-16 on TATA 2 Ton Vehicle

Tarang Shakti Electronic Warfare System

Tiger Cat Missile

Akash Missile

Fly Past by Advance Light Helicopters (ALH)

मार्च करती हुई सैन्य टुकड़ियां

राजपूत रेजिमेन्ट केन्द्र

मद्रास रेजिमेन्ट केन्द्र

कुमाऊं रेजिमेन्ट केन्द्र

मराठा एल आई रेजिमेन्ट केन्द्र

:

बैण्ड ध्वनि

"सर्वत्र विजय"

MARCHING CONTINGENTS

Rajput Regiment Centre

Madras Regiment Centre

Kumaon Regiment Centre

Maratha LI Regiment Centre

:

Band playing

"Sarvatra Vijay"

असम रेजिमेन्ट केन्द्र

Assam Regiment Centre

जम्मू एंड कश्मीर एल आई रेजिमेन्ट केन्द्र

JAK LI Regiment Centre

जम्मू एंड कश्मीर एल आई रेजिमेन्ट केन्द्र : बैंड ध्वनि
14 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र "असमिया विजेता"
एएमसी सीएंडएस

JAK LI Regiment Centre : Band playing
14 Gorkha Training Centre "Assamese Warrior"
AMC C&S

सिख एल आई रेजिमेन्ट केन्द्र

Sikh LI Regiment Centre

एओसी केन्द्र

AOC Centre

एएससी केन्द्र : बैंड ध्वनि
बिहार रेजिमेन्ट केन्द्र "फौलाद का जिगर"
एओसी केन्द्र

ASC Centre : Band playing
Bihar Regiment Centre "Faulad ka Jigar"
AOC Centre

पैरा रेजिमेन्ट केन्द्र

PARA Regiment Centre

नौसेना

NAVY

नौसेना ब्रास बैंड
नौसेना की मार्च करती हुई टुकड़ी
झाँकी

Navy Brass Band
Navy Marching Contingent
Tableau

वायु सेना

AIR FORCE

वायु सेना बैंड
वायु सेना की मार्च करती हुई टुकड़ी
झाँकी

Air Force Band
Air Force Marching Contingent
Tableau

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

DEFENCE RESEARCH AND DEVELOPMENT ORGANISATION

हल्के लड़ाकू विमान तेजस की स्वदेशी शस्त्र प्रणालियों की झाँकी।
पनडुब्बियों के लिए एयर इन्डिपेंडेंट प्रोपल्शन (एआईपी) सिस्टम की झाँकी।

Tableau of Indigenous Weapon Systems of LCA Tejas.
Tableau of Air Independent Propulsion (AIP) system for submarines.

सीएपीएफ और अन्य सहायक बल

भारतीय तटरक्षक बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड: सीआरपीएफ

सीआरपीएफ की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड: दिल्ली पुलिस

दिल्ली पुलिस बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड: सीआईएसएफ

सीआईएसएफ की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड: एसएसबी

एसएसबी की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड: बीएसएफ के ऊँट

बीएसएफ ऊँटों की मार्च करती हुई टुकड़ी

CAPFs AND OTHER AUXILIARY FORCES

Indian Coast Guard Marching Contingent

Band: CRPF

CRPF Marching Contingent

Band: Delhi Police

Delhi Police Marching Contingent

Band: CISF

CISF Marching Contingent

Band: SSB

SSB Marching Contingent

Band: BSF Camel

BSF Camel Contingent

राष्ट्रीय कैडिट कोर

छात्रों की मार्च करती हुई टुकड़ी

कुमाऊँ रेजिमेंट केन्द्र

: बैंड ध्वनि

बिहार रेजिमेंटल केन्द्र

“कदम कदम

एमसी सीएंडएस

बढ़ाए जा”

सीएमपी

छात्राओं की मार्च करती हुई टुकड़ी

NATIONAL CADET CORPS

Boys Marching Contingent

Kumaon Regiment Centre

: Band Playing

Bihar Regimental Centre

“Kadam Kadam

AMC C&S

Badhae Ja”

CMP

Girls Marching Contingent

राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना की मार्च करती हुई टुकड़ी

सामूहिक पाइप एंड ड्रम बैंड

NATIONAL SERVICE SCHEME

National Service Scheme Marching Contingent

Massed Pipes & Drums Band

सांस्कृतिक प्रस्तुति

झाँकी

— 21 (इक्कीस)

THE CULTURAL PAGEANT

Tableaux

- 21 (Twenty One)

सांस्कृतिक कार्यक्रम

“वन्दे भारतम्” प्रतियोगिता के जरिए चयनित नर्तक समूह द्वारा 04 सांस्कृतिक प्रस्तुतियां।

मोटर साइकिल करतब: बीएसएफ (महिला टीम) एवं आईटीबीपी (पुरुष टीम)

CULTURAL PERFORMANCES

04 Cultural Performances by group of dancers selected through “Vande Bharatam” competition.

Motor Cycle Display: BSF(Female team) & ITBP(Male team).

विमानों द्वारा सलामी

(मौसम अनुकूल रहने पर)

राहत आकृति: इस आकृति में पांच एएलएच विमान राजपथ के वाटर चैनल नॉर्थ के ऊपर 'वाणाग्र' आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

मेघना आकृति: इस आकृति में आगे एक सीएच-47 चिनूक विमान, चार एमआई-17 1वी विमान के साथ echelon में राजपथ के वाटर चैनल नॉर्थ के ऊपर पाँच विमानों की "वाणाग्र" आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

एकलव्य आकृति: इस आकृति में आगे एक एमआई-35 विमान, चार अपाचे हेलीकॉप्टरों के साथ echelon में राजपथ के वाटर चैनल नॉर्थ के ऊपर पाँच विमानों की "वाणाग्र" आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

टंगैल आकृति: इस आकृति में आगे एक डकोटा विमान दो डोर्नियर विमान के साथ echelon में राजपथ के वाटर चैनल नॉर्थ के ऊपर 'विक' आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

त्राण आकृति: इस आकृति में एक सी-17 विमान दो सी-130 विमानों के साथ echelon में 'विक' आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

नेत्र आकृति: इस आकृति में एक आईडब्ल्यू एंड सी विमान दो मिग-29 यूपीजी और दो सुखोई-30 एमकेआई विमानों के साथ echelon में 'वाणाग्र' आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

विनाश आकृति: इस आकृति में पांच राफेल विमान सम्मिलित हैं जो "वाणाग्र" आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

बाज आकृति: इस आकृति में एक राफेल, दो जगुआर, दो मिग-29 यूपीजी एवं दो सुखोई-30 एमकेआई विमान शामिल हैं जो सात विमानों की "वाणाग्र" आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

FLY-PAST

[If weather conditions permit]

Rahat Formation: The formation comprising five ALH aircrafts would fly in 'Arrowhead' formation over water channel North of Rajpath.

Meghna Formation: The formation comprising CH-47 Chinook aircraft in lead and four Mi-17 1V aircraft in echelon, would fly in five aircraft 'Arrowhead' formation over water channel North of Rajpath.

Eklavya Formation: The formation comprising one Mi-35 aircraft in lead with four Apache helicopters in echelon would fly in five aircraft 'Arrowhead' formation over water channel North of Rajpath.

Tangail Formation: The formation comprising one Dakota aircraft in lead with two Dornier aircrafts in echelon would fly in 'Vic' formation over the water channel North of Rajpath.

Traan Formation: The formation comprising one C-17 with two C-130 aircrafts in echelon would fly in 'Vic' formation.

Netra Formation: The formation comprising one AEW&C aircraft with two MiG 29 UPG and two Su-30 MKI aircrafts in echelon would fly in 'Arrowhead' formation.

Vinaash Formation: The formation would comprise five Rafale aircrafts which would fly in 'Arrowhead' formation.

Baaz Formation: The formation comprising one Rafale, two Jaguar, two MiG-29 UPG and two Su-30 MKI aircrafts would fly in seven aircrafts 'Arrowhead' formation.

त्रिशूल आकृति: इस आकृति में तीन सुखोई-30 एमकेआई विमान शामिल हैं जो राजपथ के वाटर चैनल नार्थ के ऊपर 900 किमी/घंटे की गति से "विक" आकृति में सलामी दे रहे हैं। सलामी मंच की ओर बढ़ते हुए यह आकृति त्रिशूल करतब के लिए ऊपर की ओर उठ रही है।

वरुण आकृति: इस आकृति में एक पी 8 आई विमान दो मिग-29 के विमानों के साथ echelon में वे "विक" आकृति में सलामी दे रहे हैं।

तिरंगा आकृति: पांच सारंग (एएलएच) राजपथ के वाटर चैनल नार्थ के ऊपर तिरंगे को फहराते हुए "सीढ़ी" की आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

विजय आकृति: एक राफेल विमान राजपथ के वाटर चैनल नार्थ के ऊपर 900 किमी/घंटे की गति से उड़ान भरता हुआ सलामी मंच की ओर आगे बढ़ते हुए विमान वर्टिकल चार्ली के लिए ऊपर उठते हुए और 2½ बार करतब दिखा रहे हैं।

अमृत आकृति: इस आकृति में सत्रह जगुआर विमान '75' की आकृति में राजपथ के वाटर चैनल नार्थ के ऊपर सलामी दे रहे हैं।

गुब्बारों का छोड़ा जाना: भारतीय मौसम विभाग।

Trishul Formation: The formation comprising three Su-30 MKI aircrafts would flypast in 'Vic' formation at 900 kmph over water channel North of Rajpath. Approaching the Dias, the formation will pull up and outwards for Trishul manoeuvre.

Varuna Formation: The formation would comprise one P8i aircraft with two MiG-29 K aircrafts in echelon and would flypast in 'Vic' formation.

Tiranga Formation: Five Sarang (ALH) would fly in 'Ladder' formation streaming Tricolour over the water channel North of Rajpath.

Vijay Formation: One Rafale aircraft would be flying in at 900 kmph over water channel North of Rajpath. Approaching the Dais, the aircraft would pull up for Vertical Charlie and carry out 2½ turns.

Amrit Formation: The formation comprises seventeen Jaguar aircrafts making a figure of '75' would flypast over the water channel North of Rajpath.

Release of balloons: India Meteorological Department

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज भारत अपना 73वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और प्रगति की झलक प्रस्तुत करती है जो भारत के गौरवशाली अतीत की प्रतीक है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति देशवासियों की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती है।

रंग बिरंगी झाँकियों का वर्ण-विन्यास भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकी पहलुओं का चित्रण करता है। इन झाँकियों में हमारे भौगोलिक सौंदर्य तथा वास्तु-शिल्पीय धरोहर को दिखाया गया है।

CULTURAL PAGEANT

Today, India is celebrating its 73rd Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilisation, cultural diversity and progress symbolising India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

The array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India. These tableaux capture the beauty of our landscape and architectural heritage.



मेघालय राज्य स्थापना की 50वीं वर्षगांठ और महिलाओं के नेतृत्व वाली सहकारी समितियों और स्वयं सहायता समूहों का सम्मान

भारत जहां आजादी का 75वां साल मना रहा है, वहीं मेघालय अपने राज्यत्व की स्थापना का 50वां वर्ष मना रहा है। अपने 50 वर्षों के राज्यत्व पर, मेघालय इस झाँकी के जरिए राज्य की आर्थिकी के लिए महिला संचालित सहकारी संघों और स्वयं सहायता समूहों (एसएचजीएस) के योगदान का सम्मान करता है। झाँकी में बांस और बेंत से बनी कलाकृतियों और लाकाडोंग हल्दी को प्रदर्शित किया गया है जो इन उत्पादों की सफलता और लोकप्रियता, महिला संचालित सहकारी समितियों और एसएचजीएस और राज्य की अर्थव्यवस्था में उनके योगदान के अनवरत प्रयासों का प्रमाण है।

झाँकी का अग्र भाग एक महिला द्वारा बांस की टोकरी बुनते और मेघालय के कई अन्य बांस और बेंत के उत्पादों को प्रदर्शित करता है। राज्य के बांस और बेंत की कलाकृतियों में भारी मात्रा में उपलब्ध सस्ते प्लास्टिक के विकल्पों के चलते एक बार गिरावट आ गई थी। इस शिल्प को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से मेघालय के कई गांवों की महिलाओं ने एक साथ मिलकर सहकारी संघ और स्वयं सहायता समूहों की स्थापना की, अब ये दुनियाभर से आई माँगों को पूरा करते हैं। इस तरह बहुत से दस्तकारों की आजीविका में सुधार हुआ है।

झाँकी का पश्च भाग पारंपरिक खेती और लाकाडोंग हल्दी के प्रसंस्करण को दर्शाता है। लाकाडोंग हल्दी, अपने उच्च हल्दी तत्वों के लिए प्रसिद्ध है और मेघालय के जयंतियां पहाड़ियों के महिला संचालित सहकारी संघों और स्वयं सहायता समूहों के प्रयासों के चलते इसे वैश्विक लोकप्रियता मिली है। समूची महत्वपूर्ण श्रृंखला महिला संचालित सहकारी और स्वयं सहायता समूहों के जरिए संचालित की जाती है, इसे झाँकी में दिखाया गया है। पश्च भाग मेघालय के 50 वर्षों के राज्यत्व के स्मरणीय लोगो को प्रदर्शित करता है।

—मेघालय

MEGHALAYA'S 50 YEARS OF STATEHOOD AND ITS TRIBUTE TO WOMEN-LED COOPERATIVE SOCIETIES AND SHGs

While India celebrates 75 years of Independence, Meghalaya celebrates its 50 years of statehood. At its 50th year of Statehood, Meghalaya through its tableau honors the contribution of women-led Cooperative Societies & Self Help Groups (SHGs) to the State's economy. The tableau showcases Bamboo & Cane handicrafts and Lakadong Turmeric, the success and popularity of these products are a testimony to the relentless efforts of the women-led Cooperative Societies and SHGs, and their contribution to the State's economy.

Front part of the tableau depicts a woman weaving a bamboo basket and the several bamboo & cane products of Meghalaya. The Bamboo and Cane handicrafts in the State once declined due to the availability of cheaper mass-produced plastic alternatives. Determined to revive this craft, women across several villages in Meghalaya came together to form Cooperative Societies and SHGs; these now cater to demands from across the globe, thus improving livelihoods of numerous artisans.

The rear portion of the tableau depicts the traditional farming and processing of Lakadong turmeric. The Lakadong turmeric, renowned for its high curcumin content, attained its global-fame due to the efforts of women-led cooperative societies & SHGs from Jaintia Hills of Meghalaya. The entire value-chain is driven by women-led Cooperatives & SHGs, this has been depicted on the tableau. The rear portion also shows the commemorative logo of Meghalaya's 50th year of statehood.

- MEGHALAYA





गुजरात के आदिवासी क्रांतिवीर

‘गुजरात के आदिवासी क्रांतिवीर’ विषयक गुजरात की झोंकी हमारे स्वाधीनता संग्राम के इतिहास का एक अनकहा अध्याय है। निर्दोष आदिवासियों पर अंग्रेजों ने अंधाधुंध गोलीबारी कर 1200 लोगों के जघन्य हत्याकांड को अंजाम दिया था। यह झोंकी उनके बलिदान को समर्पित है।

100 वर्ष पूर्व, 7 मार्च, 1922 को गुजरात के पाल-दढवाव गांव (साबरकांठा जिला, गुजरात) के भील आदिवासी अंग्रेजों और जागीरदारों के शोषण और कठोर करारोपण का विरोध करने के लिए श्री मोतीलाल तेजावत (कोलियारी गाँव के वैश्य परिवार से थे और जिन्होंने आदिवासियों के उत्थान के लिए कार्य किया और जो आदिवासियों के ‘गांधी’ के रूप में जाने जाते थे) के नेतृत्व में एकत्रित हुए थे। उन दिन जब श्री तेजावत ब्रिटिश और फ्यूडल लार्ड्स द्वारा लगाई गई भूमि राजस्व प्रणाली के विरोध में आदिवासी समुदाय को संबोधित कर रहे थे, तभी मेवाड़ भील कॉर्प्स (एमबीसी) के ब्रिटिश अधिकारी मेजर एच.जी. सटर्न के गोलीबारी के हुक्म से 1200 आदिवासियों को छलनी कर दिया गया। जिससे यहाँ के दो कुएं शहीद आदिवासियों के शवों से भर गए थे। जलियांवाला बाग की घटना के तीन साल बाद हुए उससे भी भीषण हत्याकांड को इतिहास ने भी भुला दिया था। लेकिन, आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात में अपने मुख्यमंत्री कार्यकाल के दौरान इस गाथा को स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया।

झोंकी का अग्रिम भाग आदिवासी स्वाधीनता संग्राम की भावना की मिसाल दे रहा है। झोंकी के पिछले भाग में ब्रिटिश सैनिकों द्वारा जरमरा पहाड़ियों के शीर्ष पर इस भीषण हत्याकांड को पुनः सदृश्य करने का प्रयास किया गया है। परंपरागत पोशाक में सुसज्जित आदिवासी कलाकार गैर नृत्य के साथ ही इस घटना को बयान करते गीत को लोकबोली में गा रहे हैं। आज भी वे मंगल अवसर पर इस गीत का सामूहिक गान करते हुए अपने पूर्वजों के बलिदान का गौरवस्मरण करते हैं।

—गुजरात

TRIBAL REVOLUTIONARIES OF GUJARAT

The tableau on the subject ‘Tribal Revolutionaries of Gujarat’ is an untold episode of history. The Britishers had shot to death 1200 tribal freedom-fighters. This tableau is a tribute to their sacrifice.

Hundred years ago, on March 7, 1922 Bhil tribes from Paal and Dadhvaav villages (Sabarkantha District, Gujarat) had gathered under the leadership of Shri Motilal Tejawat (from a merchant family of Koliyari village, who worked for the tribals’ upliftment and was known as ‘Gandhi’ among them). On that day when he was addressing thousands of tribals to protest against the land revenue system imposed by British and feudal lords, British officer Major H. G. Saturn from Mewad Bhil Corps ordered firing and 1200 innocent tribals were shot dead. Two wells were filled with the martyred tribals. This horrific incident, that occurred just three years after the Jallianwala Bagh incident, was forgotten but India’s Prime Minister Shri Narendra Modi during his days as the Chief Minister of Gujarat glorified it before the world.

The front part of the tableau represents the freedom fighting spirit of tribals’ ancestors. The rear portion relives the horrific moment of the massacre by British soldiers atop Jaramara Hills. Tribal artists in their traditional costumes are performing ‘Ger’ dance along with the folklore describing that event. Even today, they sing this folklore at auspicious occasions and recount the sacrifices made by their ancestors.

- GUJARAT

गोवा की धरोहर के प्रतीक

“गोवा की धरोहर के प्रतीक” विषय पर गोवा राज्य द्वारा प्रस्तुत झाँकी इसके ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक आकर्षण का दर्शा रही है। गोवा ने अपने इतिहास में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं और इतिहास के अनेक उतार-चढ़ाव के बावजूद भी इस राज्य ने अपनी विरासत, संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य को बनाए रखा।

झाँकी के अग्रभाग में दर्शाया गया आग्वद का 450 साल पुराना किला अरब सागर के किनारे स्थित गोवा परिदृश्य को परिभाषित करने वाला एक विहंगम गढ़ है। इसका निर्माण पुर्तगाली शासकों ने 1612 में डच हमलों से गोवा को सुरक्षित रखने के लिए किया था। गोवा मुक्ति संग्राम के दौरान इस किले का इस्तेमाल स्वतंत्रता सेनानियों को बड़ी सजा के लिए लिसबन भेजे जाने से पूर्व केंद्रीय कारागार के रूप में कैद में रखने के लिए किया जाता था। झाँकी के मध्य भाग में दर्शाया गया पणजी के आज़ाद मैदान पर स्थित हुतात्मा स्मारक गोवा मुक्ति के लिए हजारों स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किए गए असीम त्याग का द्योतक है। स्मारक के ऊपरी हिस्से में स्थित कमल विश्वबंधुत्व का प्रतीक है। झाँकी का पृष्ठ भाग दोना पावल को दर्शाता है जो एक रमणीय चट्टानी पर्यटन स्थल है, जो मांडवी और जुवारी नदियों तथा अरब सागर के संगम पर स्थित है। यह स्थल फिल्मों की शूटिंग के लिए विशेष विख्यात है। एक दूजे के लिए, दिल चाहता है, गोलमाल, सिंघम तथा डियर जिंदगी जैसी मशहूर फिल्में यहाँ चित्रित हुई हैं। गोवा भारत के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह का स्थायी केंद्र भी है।

गोवा का संगीत यहाँ के सागरीय जलजीवन की तरह ही वैविध्यपूर्ण और मनोहर है। झाँकी पर स्थित नर्तक गोवा की कुनबी समाज के प्रतिनिधि हैं, जो इस समुदाय के मूल निवासी हैं तथा साथ में दर्शाया गया शिगमोत्सव गोवा का सबसे बड़ा बसंत उत्सव है।

—गोवा

SYMBOLS OF GOAN HERITAGE

The tableau being presented by Goa state is on the theme “Symbols of Goan heritage” showcasing its various historical and natural attraction. Goa has seen multiple twists and turns in its history and despite these scars, the pearl of the orient has successfully preserved its heritage, culture and natural beauty.

In the front portion of tableau, Fort Aguada has been shown which, with a historical legacy of 450 years, overlooking the Arabian Sea, is a massive and marvelous citadel defining the Goan landscape. The fort was built by the Portuguese in 1612 to defend against possible Dutch invasions. During the Goan Liberation Struggle, the fort served as a central jail where freedom fighters were imprisoned before being deported to Lisbon for longer sentences. The Martyrs’ Memorial at Azad Maidan Panaji, shown in the middle of the tableau, is a symbol of selfless sacrifice made by hundreds of Freedom Fighters for the Liberation of Goa. The lotus placed at the top of the memorial symbolizes universal brotherhood. The rear portion of the tableau is showcasing Dona Paula, which is an idyllic rocky tourist attraction that lies at the confluence of rivers Mandovi and Zuari and the Arabian Sea. It is a preferred film shooting spot. Prominent films shot here include Ek Duje Ke Liye, Dil Chahta Hai, Golmaal, Singham, and Dear Zindagi. Goa is also the permanent venue for the International Film Festival of India.

The Music of Goa is also as diverse and enchanting as the aquatic life in its sea. The dancers seen atop the float represent Kunbi Community, the original inhabitants of Goa. The colorful Shigmo is the most popular spring festival in Goa.

- GOA





हरियाणा का खेलों में प्रथम स्थान

हरियाणा की झाँकी "हरियाणा का खेलों में प्रथम स्थान" की थीम पर आधारित है।

देश के केवल 1.3 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र और 2.09 प्रतिशत आबादी वाले हरियाणा ने ओलंपिक खेलों सहित पिछली कई राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में देश को प्राप्त कुल पदकों में से अधिकतम पदक जीत कर भारत का नाम रोशन किया है। टोक्यो ओलंपिक-2020 में भारत को प्राप्त कुल 07 पदकों में से हरियाणा के खिलाड़ियों ने व्यक्तिगत वर्ग में एकमात्र स्वर्ण पदक सहित 04 पदक जीते। हरियाणा सरकार ने टोक्यो ओलंपिक में भाग लेने वाले राज्य के खिलाड़ियों को 25.40 करोड़ रुपये के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया। इसी प्रकार टोक्यो पैरालिंपिक-2020 में देश को प्राप्त कुल 19 पदकों में से हरियाणा के खिलाड़ियों ने व्यक्तिगत वर्ग में दो स्वर्ण पदकों सहित 06 पदक प्राप्त किए। राज्य सरकार की कारगर नीतियों से ही खेलों के प्रति अनुकूल वातावरण बना है।

झाँकी के अग्र भाग में भगवान श्रीकृष्ण का शंख दर्शाया गया है। झाँकी के रूप में घोड़ों द्वारा खींचा जा रहा रथ महाभारत के युद्ध के "विजय रथ" का प्रतीक है। इसके साथ ही झाँकी के मध्य भाग पर बने अखाड़े में कुश्ती करते पहलवान हरियाणा में खेलों के प्रति रुझान को प्रदर्शित कर रहे हैं। झाँकी के पृष्ठ भाग में ओलंपिक सहित राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं के विजेता व प्रतिभागी खिलाड़ी दिखाई दे रहे हैं। "विजयी रथ" रूपी यह झाँकी केवल हरियाणा ही नहीं पूरे भारत के मान-सम्मान व गौरव का प्रतीक है।

—हरियाणा

HARYANA NUMBER ONE IN SPORTS

The tableau of Haryana is based on the theme "Haryana number one in sports".

Occupying only 1.3 per cent of the geographical area and accounting for 2.09 per cent of the population of the country, Haryana has brought laurels to India by winning the maximum number of medals out of the total medals won by the country in several national and international sporting events, including the Olympic Games. Out of the 07 medals won by India in Tokyo Olympics-2020, Haryana bagged 04 medals, including the lone gold medal in individual category. The Haryana government awarded cash prizes of Rs 25.40 crore to the sportspersons of the state who participated in the Tokyo Olympics. Similarly, in Paralympics-2020, out of the total 19 medals won by the country, the players of Haryana got 06 medals, including two gold medals in the individual category. Due to the effective policies of the state government, a favourable environment has been created for sports.

In the first part of the tableau, the Conch of Lord Krishna has been shown. The chariot carried by horses is a symbol of the "Victory Chariot" of the Mahabharata war. The wrestlers wrestling in the arena above the middle of the tableau reflect the affection towards sports in Haryana. In the rear of the tableau, there are participants and winners in the national and international sports competitions, including the Olympics. This tableau in the form of "Victory Chariot" is a symbol of honour and pride not only for Haryana, but also for the whole country.

- HARYANA

प्रगति की ओर बढ़ता उत्तराखंड

उत्तराखंड राज्य की झाँकी संपर्क और धार्मिक तीर्थ स्थलों में प्रगतिशील विकास परियोजनाओं से प्रेरित है। इसलिए इस झाँकी का विषय “प्रगति की ओर बढ़ता उत्तराखंड” है।

झाँकी के अग्र भाग में हेमकुंड साहिब गुरुद्वारा दिखाया गया है। हेमकुंड साहिब गुरुद्वारा प्राचीन हेमकुंड झील के तट पर लगभग 4329 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। सबसे पवित्र सिख तीर्थस्थलों में से एक, हेमकुंड साहिब प्रत्येक वर्ष हजारों तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है। बर्फ से ढकी चोटियों से घिरे, गुरुद्वारे की सुरम्य प्रकृति और ट्रेक मार्ग, जिसमें फूलों की घाटी भी शामिल है, ट्रेकर्स और पर्यटकों के लिए भी एक लोकप्रिय गंतव्य स्थल हैं।

झाँकी के पिछले हिस्से में सबसे आगे डोबरा-चांटी ब्रिज को दिखाया गया है। 440 मीटर लंबा डोबरा-चांटी सस्पेंशन ब्रिज टिहरी गढ़वाल जिला मुख्यालय और प्रताप नगर के बीच संपर्क जोड़ रहा है। टिहरी बांध भारत का सबसे ऊँचा बांध और दुनिया का चौथा सबसे ऊँचा बांध है। इसको झाँकी के मध्य भाग में दिखाया गया है। झाँकी के अंतिम भाग में बद्रीनाथ मंदिर को दिखाया गया है। बद्रीनाथ धाम भारत के चारधाम तीर्थ स्थलों में से एक है। झाँकी के किनारे वाले हिस्से में 12 हजार करोड़ की चारधाम ऑल वेदर रोड़ को दिखाया गया है। चारधाम राजमार्ग परियोजना में केदारनाथ, बद्रीनाथ, यमुनोत्री और गंगोत्री जैसे पवित्र हिंदू स्थलों में तीर्थयात्रियों एवं पर्यटकों को सुगम यातायात की सुविधा प्रदान की गई है।

—उत्तराखंड

PRAGATI KI AUR BADHTA UTTARAKHAND

The Uttarakhand State tableau is inspired by the progressive development projects in the area of connectivity and religious sites. Hence the theme of the tableau is the “Pragati ki Aur Badhta Uttarakhand”.

The front portion of the tableau shows Hemkund Sahib Gurudwara. Hemkund Sahib Gurudwara is situated at an altitude of around 4,329 m, on the bank of the pristine Hemkund Lake. One of the most sacred Sikh shrines, Hemkund Sahib draws thousands of pilgrims every year. Surrounded by snow-capped peaks, the gurudwara’s pictorial natural settings and trek routes, including the Valley of Flowers, make it a popular destination for trekkers and tourists as well.

At the front part of the rear portion of the tableau, the Dobra-Chanti Bridge is shown. The 440-meter long Dobra-Chanti suspension bridge is connecting link between Tehri Garhwal district headquarters and Pratap Nagar. Tehri Dam is the highest dam in India and the fourth highest dam in the world. It is shown in the middle part of Tableau. The Badrinath temple is shown in the end part of the tableau. Badrinath temple is one of the four sites in India’s Char Dham pilgrimage. At the side part of the tableau, 12 Thousand Crore Chardham All Weather Road is shown. In the Chardham Highway Project, the pilgrims and tourists have been provided easy transport facilities to the holy Hindu places of Kedarnath, Badrinath, Yamunotri and Gangotri.

- UTTARAKHAND





एंग्लो-अबोर (आदि) युद्ध

अरुणाचल प्रदेश भारत का सुदूर पूर्वोत्तर प्रहरी सीमांत राज्य है जहां पर समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ विविध मानवजातीय अस्तित्वों की स्वदेशी जनजातियां निवास करती हैं। झाँकी का विषय “एंग्लो-अबोर (आदि) युद्ध” अरुणाचल प्रदेश के स्वदेशी जनजातीय लोगों विशेष रूप से सियांग क्षेत्र के आदि (पहले ब्रिटिश द्वारा अबोर के रूप में जाने जाते थे) के विरोध पर आधारित है जिन्होंने भारत में तत्कालीन ब्रिटिश शासकों के उपनिवेशीय विस्तार की साम्राज्यवादी नीति के विरुद्ध वीरतापूर्वक युद्ध का सामना किया था।

ब्रिटिश आदि भूमि पर कब्जा करना चाहते थे और अपना नियंत्रण रखना चाहते थे। आदि भूमि पर उनका प्रथम दौरा वर्ष 1826 में होने की रिपोर्ट है। आदिवासियों जिन्होंने अपनी भूमि को स्वतंत्र रखने के लिए युद्ध का सामना किया, के अदम्य और निर्भीक साहस ने उनका इरादा विफल कर दिया। इसके परिणामस्वरूप चार सैन्य अभियान और अंततोगत्वा चार एंग्लो-अबोर युद्ध हुए जिनको 1858 में ‘बिटबोर मिमाक’, 1859 में ‘बोंगल मिमाक’, 1893-94 में ‘निजोम मिमाक’ तथा 1911-12 में ‘पोजु मिमाक’ के रूप में जाना गया। ब्रिटिश सेना को आदि योद्धाओं के द्वारा की गई अभूतपूर्व जोरदार जवाबी कार्रवाई के कारण निरन्तर अभियानों/युद्धों को वापस लेना पड़ा था। तथापि अनेक व्यक्तियों ने उक्त युद्धों में निर्भीक वीरता और देशभक्ति की भावना को प्रदर्शित करते हुए अपनी जान गंवाकर सर्वोच्च बलिदान दिया।

झाँकी के अग्र भाग में एक अबोर (आदि) योद्धा की अर्धप्रतिमा और घुसपैठियों को रोकते हुए दो वीरों को चित्रित किया गया है। झाँकी का पृष्ठ भाग एंग्लो अबोर (आदि) युद्ध अनुक्रम जो वर्ष 1858 और 1912 के बीच लड़ा गया था, को प्रदर्शित कर रहा है।

— अरुणाचल प्रदेश

ANGLO-ABOR (ADI) WARS

Arunachal Pradesh is the easternmost sentinel frontier of India inhabited by indigenous tribes of various ethnic entities with rich cultural heritage. The theme of the tableau “Anglo-Abor (Adi) Wars” is based on the resistance of the indigenous tribal people of Arunachal Pradesh, particularly the Adis of Siang region (formerly known as Abors by the British), who had bravely fought against the imperial policy of colonial expansion of the erstwhile British rulers in India.

The British wanted to penetrate and establish their control over the Adi Land. Their first visit to the Adi land is reported to be in 1826. It had to be cut short to a very brief period as compelled by the indomitable and independent character of the Adis who fought tooth and nail to keep their land independent. This led to series of four military expeditions and ultimately leading to the four Anglo-Abor Wars called ‘*Bitbor Mimak*’ in 1858, ‘*Bongal Mimak*’ in 1859, ‘*Nijom Mimak*’ in 1893-94 and ‘*Poju Mimak*’ in 1911-12. The British Force had to pull back in the consecutive expeditions / wars because of the unprecedented strong retaliation offered by the Adi warriors. However, many made supreme sacrifice by laying down their lives while displaying absolute bravery and patriotism in the wars.

In the front portion of the tableau a bust of an Abor (Adi) warrior and two warriors defending the intruders is depicted. The rear portion depicts an Anglo Abor (Adi) War sequence that was fought between 1858 and 1912.

- ARUNACHAL PRADESH

कर्नाटक: पारम्परिक हस्तशिल्प का पालना

राज्य की झॉंकी का विषय है “कर्नाटक—पारम्परिक हस्तशिल्प का पालना”। कर्नाटक को पारम्परिक हस्तशिल्प का पालना कहा जाता है क्योंकि सोलह कलाकृतियों को ग्लोबल इंडिकेटर (जीआई) टैग मिला है। कुशलता से बनाए गए बर्तनों से, ध्यान से गढ़ी गई चन्दन की लघु-वस्तुओं से लेकर हाथ से बुनी हुई साड़ियों तक हस्तकारी की कलात्मक सुंदरता इसकी विशिष्टता है। कर्नाटक के प्रमुख शिल्प इनले नक्काशियाँ, कांस्य से बनी मूर्तियाँ, चन्नपट्टण, किन्हाल के लेकर—वेयर खिलौने और बीदरी—वेयर हैं।

टेराकोटा सबसे पुराने हस्तशिल्पों में से एक है। किन्हाल के लकड़ी का हस्तशिल्प लेकर—वेयर काष्ठशिल्प है जिसे विजयनगर राजाओं द्वारा संरक्षित किया गया था। चन्दन की नक्काशी कर्नाटक से जुड़ी एक उत्कृष्ट कला है जिसका इतिहास हजारों साल पुराना है। हाथी दाँत की नक्काशी की कला राज्य के लिए अद्वितीय है। कर्नाटक हस्तशिल्प विकास निगम (के एस एच डी सी) ने बेहतर बाजार पाने के लिए 55,000 कारीगरों की सुविधा के लिए एक ई—कामर्स कॉर्पोरेट संगठन बनाया है।

कर्नाटक की झॉंकी के अग्रभाग में मैसूर के शीशम और हाथी दाँत की नक्काशी को दर्शाया गया है। मध्य भाग में आकर्षक बीदरी वेयर, किन्हाल शिल्प, कांस्य की मूर्तियाँ, चन्नपट्टण के लेकर—वेयर खिलौने, काष्ठ नक्काशियाँ, मिट्टी के बर्तनों को प्रदर्शित किया गया है। झॉंकी के पश्चिम भाग में “भारतीय हस्तशिल्प की मशालची” कमला देवी चट्टोपाध्याय हैं। कर्नाटक की अपनी कमला देवी चट्टोपाध्याय एक स्वतंत्र सेनानी, अभिनेत्री, सामाजिक कार्यकर्ता, कलाप्रेमी थीं जिन्होंने विलुप्त होने के कगार पर मौजूद पारम्परिक हस्तशिल्प को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

—कर्नाटक

KARNATAKA: THE CRADLE OF TRADITIONAL HANDICRAFTS

"Karnataka: The cradle of Traditional Handicrafts" is the theme of the tableau of the state. Karnataka is referred to as the *Cradle of Traditional Handicrafts* as 16 artefacts possess Global Indicator (GI) Tag. From skilfully made pots, carefully sculpted sandalwood miniatures to hand-woven sarees, the beauty of handcrafted artisanal objects is its uniqueness. Major crafts of Karnataka are Inlay carvings, Bronze Statues, lacquer ware toys from Channapatna, Kinhal and Bidriware.

Terracotta is one of the oldest crafts. Kinhal wood carving is the lacquer ware woodcraft, which was patronized by Vijayanagar Kings. Sandalwood carving is an exquisite art associated with Karnataka, which has a history of more than thousand years. The art of ivory carving is unique to Karnataka. The Karnataka State Handicrafts Development Corporation (KSHDC) has roped in an e-commerce corporate organisation facilitating 55,000 artisans to get better market.

Karnataka Tableau depicts Mysore Rosewood ivory Inlay in the front portion. Centre portion showcases eye-catching Bidriware, Kinhala craft, Bronze Statues, Lacquer ware toys from Channapatna, wood carving, pottery. At the rear portion sits Kamaladevi Chattopadhyaya, the mother of Traditional Handicrafts. Karnataka's own Kamaladevi Chattopadhyaya was a freedom fighter, actress, social activist, art enthusiast rolled-into-one played a vital role in reviving traditional handicrafts, which were on the verge of extinction.

- KARNATAKA





जम्मू और कश्मीर का बदलता रूप

केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर की झाँकी विकासात्मक परिदृश्य की पृष्ठभूमि में जम्मू और कश्मीर के बदलते रूप को दर्शाती है। जम्मू और कश्मीर भारत गणराज्य का एक नवनिर्मित केंद्र शासित प्रदेश है। इसमें जम्मू और कश्मीर नामक दो डिवीजन शामिल हैं। जम्मू को मंदिरों के शहर के रूप में जाना जाता है, जबकि कश्मीर घाटी अपने घास के मैदानों, झीलों, गुलमर्ग और सोनमर्ग जैसे ऊँचाई वाले पर्यटन स्थलों, सुंदर मुगल और ट्यूलिप उद्यानों और मार्तंड सूर्य मंदिर, नारानाग, माता खीर भवानी और शंकराचार्य जैसे प्राचीन धार्मिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है।

झाँकी का अग्र भाग जम्मू संभाग के त्रिकुटा पर्वत में कटरा स्थित विश्व प्रसिद्ध माता वैष्णो देवी भवन को प्रदर्शित कर रहा है। यह भारत के सबसे अधिक देखे जाने वाले तीर्थस्थलों में से एक है। इन तीर्थ यात्रियों/पर्यटकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए कटरा में सबसे अच्छा बुनियादी ढांचा है। झाँकी के पश्चिम भाग में भारतीय प्रबंधन संस्थान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, एम्स और अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की स्थापना को दर्शाया गया है, जो हाल के वर्षों में केंद्र शासित प्रदेश में कुछ नवीनतम विकास हैं।

झाँकी का मुख्य आकर्षण चिनाब नदी पर दुनिया का सबसे ऊँचा रेलवे पुल है, जो कश्मीर को रेलगाड़ी के माध्यम से देश के बाकी हिस्सों से जोड़ता है। इसके अलावा, हाल ही में निर्मित बनिहाल काजीगुंड राजमार्ग सुरंग जिसे पिछले साल यातायात के लिए खोल दिया गया था, कश्मीर के बर्फ से ढके पहाड़ों की पृष्ठ भूमि में दर्शायी गयी है। यह भारत की सबसे लंबी सुरंगों में से एक है, जिसकी लंबाई 8.45 किमी है। यह सुरंग श्रीनगर और जम्मू के बीच की दूरी को 16 किमी और बनिहाल और काजीगुंड के बीच यात्रा के समय को 2 से 3 घंटे से घटाकर 16 मिनट कर देती है। झाँकी को जम्मू-कश्मीर के पारंपरिक लोक संगीत के साथ और मनमोहक बनाया गया है।

—जम्मू और कश्मीर

CHANGING FACE OF JAMMU & KASHMIR

Tableau of the UT Jammu and Kashmir is depicting changing face of Jammu and Kashmir in the backdrop of developmental scenario. Jammu & Kashmir is a newly created Union Territory of Republic of India. It consists of two divisions namely Jammu and Kashmir. Jammu is known as city of temples, while Kashmir Valley is famous for its meadows, lakes, high altitude tourist destinations like Gulmarg and Sonamarg, beautiful Mughal and Tulip Gardens, and ancient religious sites like Martand Sun Temple, Naranag, Mata Kheer Bhawani and Shankaracharya.

The front portion of Tableau is showcasing the world famous Mata Vaishno Devi Bhawan located at Katra in the Trikuta Mountains of Jammu Division. It is one of the most visited pilgrimage centres of India. Katra has the best infrastructure to cater the needs of these pilgrims/tourists. The rear portion of Tableau depicts Indian Institute of Management, Indian Institute of Technology, AIIMS and International Airport being established, which are the some of the exciting developments in UT in recent years.

One of the highlights of tableau is the world's highest railway bridge on Chenab River, which connects Kashmir with rest of the country through train. Further, recently constructed Banihal Qazigund highway tunnel which has been thrown open to the traffic last year is depicted in the backdrop of snow clad mountains of Kashmir. It is one of the longest tunnel in India, with a length of 8.45 km. The tunnel reduces the distance between Srinagar and Jammu by 16 km and travel time from 2 to 3 hours to 16 minutes between Banihal and Qazigund. Tableau is further enriched with traditional folk music of J&K.

— JAMMU & KASHMIR

गोधन न्याय योजना: खुशहाली का नया रास्ता

प्रस्तुत झाँकी छत्तीसगढ़ की गोधन न्याय योजना पर केन्द्रित है। ग्रामीण संसाधनों के उपयोग के पारंपरिक ज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समन्वय से एक साथ अनेक वैश्विक चिंताओं के समाधानों के लिए यह झाँकी विकल्प प्रस्तुत करती है।

झाँकी के अग्रभाग में गाय के गोबर को इकट्ठा करके उन्हें विक्रय के लिए गोठानों के संग्रहण केन्द्रों की ओर ले जाती पारंपरिक आदिवासी वेशभूषा में ग्रामीण महिलाओं को दर्शाया गया है। उन्होंने हाथों से बने कपड़े और गहने पहन रखे हैं। उनके चारों ओर सजे फूलों के गमले गोठानों में साग-सब्जियों और फूलों की खेती के प्रतीक हैं। नीचे की ओर गोबर से बने दीयों की सजावट है। ये दीये ग्रामीण महिलाओं के जीवन में आए स्वावलंबन और आत्मविश्वास के प्रतीक हैं।

पृष्ठ भाग में गौठानों को रूरल इंडस्ट्रीयल पार्क के रूप में विकसित होते दिखाया गया है। नयी तकनीकों और मशीनों का उपयोग करके महिलाएं स्वयं की उद्यमिता का विकास कर रही हैं। वे गांवों में छोटे-छोटे उद्योग संचालित कर रही हैं। मध्य भाग में दिखाया गया है कि गाय को ग्रामीण अर्थव्यवस्था के केन्द्र में रखकर किस तरह पर्यावरण संरक्षण, जैविक खेती, पोषण, रोजगार और आय में बढ़ोत्तरी के लक्ष्यों को हासिल किया जा सकता है। सबसे आखिर में चित्रकारी करती हुई ग्रामीण महिला पारंपरिक शिल्प और कलाओं के विकास की प्रतीक है। झाँकी में भित्ति-चित्र शैली में विकसित हो रही जल प्रबंधन प्रणालियों, बढ़ती उत्पादकता और खुशहाल किसान को भी दिखाया गया है। इसी क्रम में गोबर से बनी वस्तुएं और गोबर से वर्मी कंपोस्ट तैयार करती स्व सहायता समूहों की महिलाओं को दिखाया गया है।

—छत्तीसगढ़

GODHAN NYAY YOJANA: A NEW PATH TO PROSPERITY

The tableau presented here is based on the Godhan Nyay Yojana of Chhattisgarh. The tableau portrays the various ways in which this scheme addresses the multiple global concerns at once by synergizing traditional knowledge and scientific approach to the use of rural resources.

The obverse of the tableau depicts rural women in traditional tribal costumes collecting cow dung and taking them to the collection centers in Gauthans for sale. They are wearing hand made clothes and jewellery. The flower pots decorated around them symbolize the cultivation of vegetables and floriculture in gauthans. Downstairs there is a decoration of diyas made of cow dung. These diyas symbolize the self-dependence and self-confidence of women in rural areas.

Rear portion the tableau depicts the development of gauthans into Rural Industrial Parks. Women are developing their own enterprises by using new technologies and machines. They are running small industries in the villages. The middle section shows how the goals of environmental protection, organic farming, nutrition, employment and income improvement can be achieved by placing cow at the center of the rural economy. Lastly, the view of rural woman painting symbolizes the development of traditional crafts and arts in the state. The tableau also depicts evolving water management systems, increasing productivity and a happy farmer in a mural style. In this sequence, women of self-help groups are shown preparing various products and vermi compost from cow dung.

- CHHATTISGARH





ओडीओपी और काशी विश्वनाथ धाम

उत्तर प्रदेश की यह झाँकी Achievements @75 पर आधारित है। झाँकी में प्रदेश सरकार की नई सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम नीति एवं औद्योगिक विकास नीति पर आधारित एक जनपद एक उत्पाद (ओ.डी.ओ.पी.) के माध्यम से कौशल विकास एवं रोजगार के जरिए प्राप्त उपलब्धियों को दर्शाया गया है। साथ ही विश्व विख्यात काशी विश्वनाथ कोरिडोर में हुए विकास को प्रदर्शित किया गया है।

झाँकी के अग्रभाग पर प्रदेश के प्रत्येक जनपद के उत्पादों को दर्शाया गया है, जो प्रदेश की पारंपरिक शिल्प, बुनकर एवं हस्तशिल्प के माध्यम से राज्य की अर्थव्यवस्था की तेज गति को दिखाता है।

झाँकी के मध्य भाग श्री काशी विश्वनाथ धाम में स्थित विभिन्न घाटों पर साधु-संतों द्वारा पूजा-अर्चना के साथ ही सूर्य को अर्घ दिये जाने की परंपरा को प्रदर्शित किया गया है।

झाँकी के पृष्ठ भाग में श्री काशी विश्वनाथ धाम को प्रदर्शित किया गया है, जो विश्व के प्राचीन शहर वाराणसी के गौरवशाली इतिहास को दर्शाता है। वाराणसी शहर का नाम वरुणा और अस्सी दो नदियों से मिलकर बना है। मोक्षयादनी मां गंगा के पश्चिम तट पर एवं शहर के मध्य में स्थित काशी विश्वनाथ धाम में भगवान विश्वेश्वर का ज्योतिर्लिंग प्रतिष्ठित है। इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन मात्र से आध्यात्मिक तत्वज्ञान एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस मंदिर का निर्माण महारानी अहिल्या बाई होल्कर द्वारा सन् 1780 में कराया गया था।

— उत्तर प्रदेश

ODOP AND KASHI VISHWANATH DHAM

The tableau of Uttar Pradesh is based on the Achievements@75. The tableau shows the achievements achieved through skill development and employment through One District One Product (ODOP) which is based on the new micro, small and medium enterprise policy and industrial development policy of the state government. The development which has taken place in the world famous Kashi Vishwanath corridor is also exhibited.

In the front portion of the tableau, the products of each district have been shown which showcases the fast growth of the economy of the state through traditional crafts, weavers and handicrafts products.

In central part of the tableau, the culture of sadhus and priests offering argh to the sun at various ghats of Varanasi along with their morning prayers have been shown.

In the rear portion of the tableau, the Kashi Vishwanath Dham has been shown showcasing glorious history of world's ancient city Varanasi. The name of Varanasi city is made from two rivers Varuna and Assi. The Jyotirling of Lord Vishweshwar is revered in Kashi Vishwanath Dham which is situated in the heart of the city and western ghat of Mokshyadani Maa Ganga. The mere sight of this Jyotirlinga leads to spiritual tatvgyan and moksha. The construction of this temple was done by queen of Indore Ahilyabai Holkar in 1780 A.D.

- UTTAR PRADESH

स्वाधीनता संघर्ष में पंजाब का योगदान

गणतंत्र दिवस परेड-2022 के लिए पंजाब की झाँकी ब्रिटिश शासन से स्वाधीनता के लिए राष्ट्र की लड़ाई के दौरान पंजाब द्वारा किये गए व्यापक योगदान को प्रस्तुत करती है।

झाँकी में, स्वाधीनता आंदोलन के पावन शहीदों यथा—शहीद—ए—आजम भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव, लाहौर में पंजाब केसरी लाला लाजपत राय द्वारा साइमन कमीशन के विरुद्ध किए गए विरोध और शहीद ऊधम सिंह द्वारा जलियावाला बाग हत्याकांड के 21 सालों बाद माइकल ओ डायर जो उस हत्याकांड के समय पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर थे की 13 मार्च, 1940 को कैक्सटन हाल लंदन में गोली मारकर हत्या करके बदला लेने का दृश्य दिखाया गया है।

झाँकी के अग्र भाग की शुरुआत में वीर स्वतंत्रता सेनानियों — शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को श्रद्धांजलि दी गई है जिसमें उन्हें करतारपुर के जंग—ए—आजादी स्मारक के एक हिस्से में खड़े हुए दिखाया गया है। पश्च भाग के आरंभ में 30 अक्टूबर, 1928 को लाला लाजपत राय द्वारा साइमन कमीशन के विरोध जिसमें वे पुलिस लाठीचार्ज में घायल हो गए थे और 17 नवम्बर, 1928 को मृत्यु को प्राप्त हुए, के दृश्य को दर्शाया गया है। झाँकी के मध्य भाग में 13 मार्च, 1940 की घटना का दृश्य दिखाया गया है जहां शहीद ऊधम सिंह ने माइकल ओ डायर जो जलियावाला बाग हत्याकांड के लिए जिम्मेदार था, की गोली मारकर हत्या की थी। दृश्य में ऊधम सिंह को बड़ी मूर्ति के रूप में दर्शाया गया है। झाँकी के पश्च भाग के अंत में करतारपुर के जंग—ए—आजादी स्मारक के अन्य हिस्से को दर्शाया गया है जहां समाज के सभी वर्गों के लोगों द्वारा शहीदों को सम्मान देते हैं। झाँकी के साइड पैनल में स्वाधीनता आंदोलन के प्रतीकात्मक दृश्यों को दर्शाया गया है।

— पंजाब

PUNJAB'S CONTRIBUTION IN FREEDOM STRUGGLE

The tableau of Punjab for the Republic Day parade-2022 brings to the fore the immense contribution made by Punjab during the nation's fight for independence from the British rule.

The tableau depicts the hallowed martyrs of the freedom movement viz. Shaheed-e-Azam Bhagat Singh, Rajguru and Sukhdev, Protest against the Simon Commission led by Punjab Kesari Lala Lajpat Rai in Lahore and Shaheed Udham Singh avenging Jallianwala Bagh massacre after 21 years by shooting Michael O'Dwyer, the Lieutenant Governor of Punjab at the time of massacre, dead on 13th March, 1940 in Caxton Hall, London.

The front portion of the tableau commences with paying of homage to the gallant freedom fighters- Shaheed Bhagat Singh, Sukhdev and Rajguru, shown standing within a portion of the Jang-e-Azadi Memorial at Kartarpur. The rear portion commences with the scene of protest against the Simon Commission led by Lala Lajpat Rai on 30th October 1928 who was injured in police lathi charge and succumbed to his injuries on 17th November 1928. The middle portion of the tableau showcases the incident of 13 March 1940, when Shaheed Udham Singh shot dead Michael O'Dwyer who was responsible for the massacre at Jallianwala Bagh. Udham Singh is shown on larger scale in sculptural form in the scene. The end of the rear of the portion shows other part of Jang-e-Azadi Memorial of Kartarpur where people from all sections of the society pay respects to the martyrs. On the side panels of the tableau symbolic scenes from the freedom movement have been exhibited.

- PUNJAB





महाराष्ट्र की जैवविविधता एवं जैव प्रतीक

महाराष्ट्र राज्य इस झाँकी द्वारा राज्य की जैवविविधता और जैव प्रतीकों को प्रदर्शित कर रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत 75वें वर्ष की उपलब्धियों से प्रेरित झाँकी में राज्य के पांच जैव प्रतीक, विशेष पर्यावरण स्थल, वैशिष्ट्यपूर्ण प्राणी और वनस्पति को प्रदर्शित किया गया है।

महाराष्ट्र में जैव विविधता और पर्यावरण को बचाने के कई सारे प्रयास हो रहे हैं। राष्ट्रीय उद्यान, पक्षी अभयारण्य, कच्छ वनस्पति तथा तटीय जैवविविधता फाउंडेशन, टाइगर प्रोजेक्ट, माझी वसुंधरा प्रोजेक्ट, प्लास्टिक पर पाबंदी अधिनियम, जैवविविधता हेरिटेज स्थल, जैवविविधता बोर्ड आदि के द्वारा पर्यावरण रक्षण हो रहा है। वृक्षारोपण के जरिए महाराष्ट्र को हराभरा करने के प्रयास चल रहे हैं। महाराष्ट्र ऐसा पहला राज्य है, जहाँ प्लास्टिक पर पाबंदी है। महाराष्ट्र ने जैव प्रतीक—जैसे कि राजकीय पशु बड़ी गिलहरी (शेकारु) राजकीय पक्षी—हरियाल, राजकीय वृक्ष—आम का पेड़, राजकीय फूल—जारुल और राजकीय तितली—ब्ल्यू मॉरमॉन घोषित किये हैं।

झाँकी के अग्रभाग में राजकीय तितली ब्ल्यू मॉरमॉन को दर्शाया गया है। झाँकी पर दो महत्वपूर्ण स्थलों के साथ-साथ लगभग 15 पशु-पक्षी एवं 22 वनस्पति/फूलों को दर्शाया गया है। उपरोक्त पांच जैव प्रतीकों के अलावा कास पठार पर पाया जानेवाला सरडा सुपरबा, विदर्भ में पाया जानेवाला बाघ, ग्रेट इंडियन बस्टर्ड, फ्लेमिंगो, हाल ही में खोजे गए केंकड़े और मछली, फॉरेस्ट आकूलेट, हाल ही में खोजे गए युफिया दोसेघरेंसिस और इसियस तुकारामी इन्सेक्टस मालाबार हॉर्नबील, इंडियन वल्चर आदि को झाँकी पर कलात्मकता से प्रदर्शित किया गया है। महाराष्ट्र में पायी जाने वाली वनस्पतियों जैसे कि अरजरिया, फ्रेरिया, हबेनारिया, युट्रीक्युलॉरिया, एडेनून, अकेसिया, सायनोटिस, स्मिथिया, इम्पेपेंस, इरियोकोलान, अरिसिमा, सिरोपेजीया, विग्ना, एक्सकम, झायलोकार्पस आदि को झाँकी पर दर्शाया गया है।

—महाराष्ट्र

BIODIVERSITY AND STATE BIO-SYMBOLS OF MAHARASHTRA

The state of Maharashtra is showcasing, “Biodiversity and Bio-Symbols of the State”, through its tableau. In the tableau, inspired by Achievement@75 under the Azadi ka Amrit Mahotsav, the State’s Five Bio-symbols, peculiar environmental sites, special flora and fauna have been depicted.

Many efforts are being made to conserve the biodiversity and environment in Maharashtra. Environment is being protected through National Parks, Bird Sanctuaries, Mangrove and Coastal Biodiversity Development Foundation, Tiger Project, Majhi Vasundhara Project, Plastic Ban Act, Biodiversity Heritage Sites, Biodiversity Board etc. Efforts are on to make Maharashtra green through tree plantation. Maharashtra is the first state where plastic is banned. Maharashtra has declared Bio-Symbols, such as State Animal - Big Squirrel (Shekaru), State Bird - Hariyal, State Tree - Mango Tree, State Flower - Jarul and State Butterfly - Blue Mormon.

The front part of the tableau depicts the State butterfly Blue Mormon. About 15 animals and 22 plants/flowers are being shown on the tableau along with two important sites. Apart from the above five State Symbols; Sarada superba found on Kas plateau, Tiger found in Vidarbha, Great Indian Bustard, Flamingo, recently discovered Crab and Fish, Forest Owlet, recently discovered Euphia thosegharensis and Icius tukarami insects, Malabar Hornbill, Indian Vulture etc. have been artistically displayed on the tableau. The plants species like Argyeria, Freria, Habenaria, Utricularia, Adenoon, Acacia, Cynotis, Smithia, Impatiens, Eriocolan, Arisaema, Ceropegia, Vigna, Exacum, Xylocarpus etc. have been shown on the tableau.

- MAHARASHTRA

श्री अरविन्द के 150 वर्ष

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार श्री अरविंदो के जीवन एवं दर्शन पर केंद्रित झाँकी प्रस्तुत कर रहा है, जबकि देश उनका 150वां जन्म दिवस मना रहा है।

15 अगस्त 1872 को जन्मे, श्री अरविंदो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी, आध्यात्मिक नेता, दार्शनिक, योगी, महर्षि और एक द्रष्टा-कवि थे। एक राष्ट्रवादी और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में उन्होंने भारत को एक आत्मा के रूप में देखा और एक तीन गुना राजनीतिक कार्यक्रम बनाया—स्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार। वे बंदे मातरम जैसे अखबारों का संपादन करने वाले पत्रकार थे। जेल में रहते हुए उनके पास एक दिव्य दृष्टि थी और इस प्रकार वे धीरे-धीरे एक आध्यात्मिक सुधारक बन गए, मानव प्रगति और आध्यात्मिक विकास पर अपने दृष्टिकोण का परिचय दिया। उन्होंने भारत के पुनर्जागरण की कल्पना की और अपने प्राचीन आध्यात्मिक ज्ञान को पुनः प्राप्त किया। उनकी आध्यात्मिक सहयोगी मीरा अल्फासा जिन्हें “द मदर” के नाम से जाना जाता है, ने श्री अरविंदो आश्रम और ऑरोविले के साथ उनकी दृष्टि को प्रकट करने में मदद की।

झाँकी श्री अरविंदो के अद्वितीय व्यक्तित्व की एक झलक प्रस्तुत करती है। झाँकी के सामने का हिस्सा ऑरोविले में मातृमंदिर और ज्ञान के वृक्ष के प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व के साथ श्री अरविंदो की विशाल मूर्ति को आध्यात्मिकता के प्रतीक के रूप में प्रदर्शित करता है। मध्य भाग श्री अरविंदो के जीवन में एक राजनीतिक नेता से एक आध्यात्मिक गुरु और एक विपुल विचारक—लेखक के रूप में उनकी यात्रा को दर्शाते हुए ऐतिहासिक क्षणों को प्रदर्शित करता है। झाँकी का पिछला भाग पुडुचेरी में प्रतिष्ठित श्री अरविंदो आश्रम, श्री अरविंदो और द मदर की दिव्य उपस्थिति, उनके मौलिक कार्यों और भारत माता की उनकी स्वप्न छवि की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

— संस्कृति मंत्रालय

150 YEARS OF SRI AUROBINDO

The Ministry of Culture, Government of India presents the tableau on the life and works of Sri Aurobindo as the nation celebrates his 150th birth anniversary.

Born on 15th August 1872, Sri Aurobindo was a pioneer of Indian freedom Struggle, Spiritual Leader, Philosopher, Yogi, Maharishi and a Seer-Poet. As a nationalist and freedom fighter he saw India as a soul and created a threefold political program—Swaraj, Swadeshi, Boycott. He was a journalist, editing newspapers such as Bande Mataram. While in jail he had a divine vision and thus he gradually became a spiritual reformer, introducing his visions on human progress and spiritual evolution. He visualized India's renaissance and recovered her ancient spiritual knowledge. His spiritual collaborator Mirra Alfassa known as “The Mother” helped manifest his vision with Sri Aurobindo Ashram and Auroville.

The tableau presents a glimpse into the unique persona of Sri Aurobindo. The front part of the tableau displays a larger than life sculpture of Sri Aurobindo as an epitome of spirituality along with the symbolic representation of the Matri Mandir at Auroville and the Tree of Knowledge. The middle part showcases landmark moments in the life of Sri Aurobindo depicting his journey from a political leader to a spiritual master and also as a prolific thinker-author. The rear part of the tableau draws attention to the iconic Sri Aurobindo Ashram in Puducherry, the divine presence of Sri Aurobindo and the Mother, his seminal works and his dream image of Bharat Mata.

- MINISTRY OF CULTURE





राष्ट्रीय शिक्षा नीति

शिक्षा मंत्रालय तथा कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय की झाँकी 'वेदों से मेटावर्स' विषय के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) के प्रमुख पहलुओं को प्रदर्शित करती है।

भारतीय विचार और दर्शन में ज्ञान, बुद्धिमत्ता (प्रज्ञा), कौशल (कौशल्य) और सत्य की खोज को सदैव ही सर्वोच्च मानव लक्ष्य माना जाता था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अपनी संकल्पना बेहद अनूठी है। यह हमारी संस्कृति के मूल में निहित है, साथ ही 21वीं सदी में मानव संसाधन की आवश्यकता को पूर्ण करने की क्षमता भी रखती है। आनंददायी शिक्षा सुनिश्चित करते हुए यह शिक्षाशास्त्र के नवीनतम प्रौद्योगिकी के प्रयोग को बढ़ावा देती है। यह नवाचार और रचनात्मकता पर अधिक बल देते हुए मातृभाषा और बहु-विषयक दृष्टिकोण से शिक्षा देने पर बल देती है।

झाँकी के अग्र भाग में शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन काल की हमारी समृद्ध परंपरा और गौरवशाली अतीत को, जहाँ वेदों से लेकर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली तक, फिर नालंदा जैसे विश्वविद्यालय जहाँ दुनिया भर से हजारों छात्र आते थे, को दर्शाया गया है। झाँकी के पिछले हिस्से का अग्र भाग एक चमकता हुआ मस्तिष्क जैसा 'बल्ब' दर्शाता है जो नवाचार और रचनात्मक पहलुओं का प्रतीक है। विभिन्न आयु वर्ग के विद्यार्थियों का समूह कौशल विकास, आनंदपूर्ण शिक्षा, संवर्धित वास्तविकता (एआर) / आभासी वास्तविकता (वीआर) आदि जैसी नवीनतम तकनीकों को प्रदर्शित करता है। एलईडी स्क्रीन पर चलाए गए डिजिटल पुस्तक की वीडियो में बहु-विषयक शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार, स्टार्ट-अप, रोबोटिक्स और मेटावर्स को दर्शाया गया है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक के शिक्षाविदों/वैज्ञानिकों के चित्र भी झाँकी के दोनों ओर देखे जा सकते हैं।

—शिक्षा मंत्रालय एवं कौशल विकास
और उद्यमिता मंत्रालय

NATIONAL EDUCATION POLICY

The Tableau of Ministry of Education and Ministry of Skill Development & Entrepreneurship showcases the key aspects of National Education Policy (NEP 2020) through the theme 'Vedas to Metaverse'.

The pursuit of Knowledge (Jnan), Wisdom (Pragyaa), Skill (Koushalya) and Truth (Satya) was always considered in Indian thought and philosophy as the highest human goal. NEP is very unique in its concept. It is deeply rooted in our culture but has the ability to address the human resource requirement of 21st century. It promotes substantial use of cutting-edge technology for pedagogy while ensuring joyful education. It further emphasizes on the innovation and creativity and stresses on giving education in mother tongue and multi-disciplinary approach.

The front portion of the Tableau depicts our rich tradition and glorious past in the area of education since ancient times starting from the Vedas followed by the Gurukul education system, then the universities like Nalanda where thousands of students used to come from all over the world. The first part of the rear portion shows a glowing brain-like 'Bulb' symbolizing the innovation & creativity aspects. Procession of students of different age groups depict skill development, joyful learning, emphasizing latest technologies like Augmented Reality/ Virtual Reality etc. Video played on the LED screens of the digital book depicts multidisciplinary education, Research & Innovation, Startups, Robotics and Metaverse. Images of educationists/scientists from ancient times to modern age can also be seen on both sides of the Tableau.

- MINISTRY OF EDUCATION AND MINISTRY OF
SKILL DEVELOPMENT & ENTREPRENEURSHIP

भारतीय डाकः संकल्प @ 75—महिला सशक्तीकरण

डाक विभाग की झाँकी का विषय “भारतीय डाक : संकल्प@75—महिला सशक्तीकरण” है। डाक विभाग, महिलाओं के लिए न केवल आदर्श नियोक्ता है बल्कि उन्हें वित्तीय समावेशन संबंधी सेवाएं भी मुहैया कराता है। इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक के साथ-साथ डाकघर बचत बैंक के मामले में लगभग 50% खाताधारक महिलाएं हैं।

यह झाँकी, भारतीय डाक की व्यापक पहुँच और आधुनिक स्वरूप को दर्शाती है, जो समस्त देश को एक सूत्र में पिरोती है। इस झाँकी में यह दर्शाया गया है कि विभाग किस प्रकार महिला सशक्तीकरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए न केवल ‘मात्र महिला कार्मिकों द्वारा संचालित डाकघर’ तथा ‘दिव्यांगजनों के लिए अनुकूल डाकघर’ संचालित कर रहा है, बल्कि अपनी महिला कार्मिकों को पुरुष कार्मिकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने का अवसर भी प्रदान कर रहा है।

झाँकी के अग्र भाग पर डिजिटल डिवाइस और डाकिये की पहचान डाक थैले के साथ महिला डाक कार्मिक को दर्शाया गया है। साथ ही, साइड रिलीफ पर हरकारे (पैदल संदेशवाहक) की इमेज दर्शाई गई है। यह प्रौद्योगिकी और परंपरा का बेजोड़ मेल है। इन दोनों चित्रों को सबके जाने-पहचाने लेटरबॉक्स के आगे दर्शाया गया है। झाँकी के मध्य भाग में श्रीनगर का तैरता (फ्लोटिंग) डाकघर दिखाया गया है। इस पर अंकित बालिकाओं की आकृति के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम ‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ’ अभियान के अंतर्गत शुरू की गई सुकन्या समृद्धि योजना पर बल दिया गया है। केवल महिला कर्मियों द्वारा संचालित डाकघर महिला-पुरुष समानता के प्रति भारतीय डाक के संकल्प को दर्शाता है। झाँकी के पिछले भाग में सबसे पुराने जीपीओ, कोलकाता जीपीओ को दर्शाया गया है, जो कि भारतीय डाक के गौरवशाली सफर का गवाह है और साथ ही, कोलकाता की एक सुप्रसिद्ध इमारत भी है। झाँकी के चारों ओर, देश के स्वतंत्रता संघर्ष से संबंधित डाक-टिकटों का कोलाज है, जिन्हें डिजिटल रूप से खादी पर प्रिंट किया गया है।

—डाक विभाग

INDIA POST : 75 YEARS@ RESOLVE- WOMEN EMPOWERMENT

The tableau of Department of Post, showcases the theme “INDIA POST:75 YEARS@ RESOLVE-WOMEN EMPOWERMENT”. The Department stands as a model employer of women besides rendering financial inclusion services to women; almost 50% account holders of the India Post Payments Bank as well as the Post Office Savings Bank are women.

The tableau displays the robust outreach and the modern face of India Post that ties the entire country in one thread and aims to portray its focus on women empowerment not only through ‘All women post offices’ & Divyang friendly post offices but also by providing opportunity to women employees to serve shoulder to shoulder along with men.

The front of the tableau features a Post Woman, equipped with a digital device and a postman’s bag; a perfect blend of technology and tradition with the image of a Harkara (foot Dak messenger) as side relief. The two images are set in the foreground of the ubiquitous red letter box. The middle part of the tableau features the Floating Post Office of Srinagar with girl children emphasizing the SUKANYA SAMRIDDHI YOJANA, a scheme under Honorable PM’s initiative of “*Beti Bachao Beti Padhao*” campaign. The All Women Post Office showcases India Post’s resolve and a step towards gender equality. At the rear is the Kolkata GPO; the oldest GPO, a proud witness to the journey of India Post and one of the iconic heritage buildings of India. Adorning the tableau, there is a collage of stamps digitally printed on khadi, pertaining to the country’s freedom struggle.

- DEPARTMENT OF POST





भारतीय वस्त्र विरासत की भविष्य की उड़ान

वस्त्र मंत्रालय की झॉकी "भविष्य के लिए अन्तरिक्ष वाहन (शटल)" विषय को प्रदर्शित करती है जो दर्शकों को अतीत से भविष्य तक की इस यात्रा को इस झॉकी के माध्यम से प्रदर्शित करने का प्रयास करती है। इस झॉकी की अवधारणा बुनाई में इस्तेमाल होने वाले 'शटल' से प्रेरित है। यह पारंपरिक बुनाई शटल अंतरिक्ष-वाहन (शटल) में बदल जाती है, जो पारंपरिक वस्त्रों के भविष्य के तकनीकी वस्त्रों के विकास को दर्शाती है।

विश्व स्तर पर पारंपरिक वस्त्रों और प्राकृतिक रेशों के क्षेत्र में भारत की ताकत को परिभाषित किया गया है और अब यह तकनीकी वस्त्रों में एक प्रमुख उत्पादक के रूप में उभर रहा है। कोविड -19 संकट के दौरान जब वैश्विक विनिर्माण ठप हो गया था, तब भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा पीपीई किट उत्पादक बन गया।

झॉकी के सामने का हिस्सा शटल का प्रतिनिधित्व करता है और इसके ऊपर चरखे, कपास की गेंदें और रेशम का कोकून है जो फाइबर से यार्न रूपांतरण का प्रतिनिधित्व करता है। पीछे के हिस्से में रंगीन धागे दर्शाये हैं जिन्हें करघे द्वारा कपड़े में रूपांतरित कर दिया जाता है और बाद में विभिन्न पारंपरिक और तकनीकी परिधानों में बदल दिया जाता है। एक बुनकर हथकरघा में सूत से रंगा हुआ एक सुंदर कपड़ा बुन रहा है। उसके आगे "इंडिया साइज" परियोजना प्रदर्शित की गई है, निफ्ट द्वारा राष्ट्रीय महत्व की यह परियोजना शुरू की जा चुकी है और भारतीय आबादी के लिए एक व्यापक बॉडी साइज चार्ट विकसित किया जा रहा है। "इंडिया साइज" हमारे देश के सभी विनिर्माण क्षेत्रों में वस्त्र मंत्रालय के महत्वपूर्ण योगदानों में से एक होगा। झॉकी के अंत में स्पेस-शटल के दो एग्जॉस्ट जेट हैं। हमारे विभिन्न राज्यों के प्रसिद्ध पारंपरिक रंगीन वस्त्रों और तकनीकी वस्त्रों (स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र) पर लाइव मॉडल झॉकी के साथ चल रहे हैं।

—वस्त्र मंत्रालय

SHUTTTLING TO THE FUTURE

The tableau of Ministry of Textiles (MoT) showcases the theme "shuttling to the future" which attempts to take the viewers through the lens of this journey from past to the future. The concept of this tableau is inspired by the 'Shuttle' used in weaving. This traditional weaving shuttle transforms to a Space-shuttle, reflecting the evolution of traditional textiles to futuristic technical textiles.

India's strengths have been defined in traditional textiles and natural fibers globally and is now emerging as a key player in technical textiles. During Covid-19 crisis when global manufacturing came to a grinding halt, India became the second largest PPE kit manufacturer.

The front part of the tableau represents shuttle and has charkhas, cotton balls and silk cocoon on top which represent fiber to yarn conversion. The rear part has colored yarns which are converted into fabric by looms and in turn into different traditional to technical apparels. A weaver is weaving a beautiful yarn dyed fabric in the handloom. Next to that is "India size", NIFT has undertaken this project of national importance and developing a comprehensive body size chart for the Indian population. "India size" will be one of the significant contributions of MoT to all the manufacturing sectors in our country. The end of the tableau has two exhaust jets of a Space-shuttle. Live models on our renowned traditional colorful textiles of our various states and technical textiles (health care sector) are walking along with the tableau.

- MINISTRY OF TEXTILES

उड़ान-उड़े देश का आम नागरिक

नागर विमानन मंत्रालय की झाँकी में क्षेत्रीय संपर्क योजना (आरसीएस) –उड़ान (उड़े देश का आम नागरिक) और इससे प्राप्त होने वाले समृद्ध लाभों को प्रदर्शित किया गया है। मंत्रालय द्वारा संकल्पित और भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) द्वारा लागू की गई इस योजना का उद्देश्य आर्थिक रूप से टिकाऊ और किफायती तरीके से क्षेत्रीय संपर्क को बढ़ाना है।

वर्ष 2016 में शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य टियर II और III शहरों में विमानन बुनियादी ढाँचे और हवाई संपर्क को बढ़ाना है ताकि आम आदमी की आकांक्षाओं को पूरा किया जा सके। 'उड़ान' पहल के तहत पहली उड़ान को माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा शिमला में 2017 में हरी झंडी दिखाई गई थी। आज, 403 उड़ान मार्ग 65 अल्प परिचालित/अपरिचालित हवाई अड्डों को जोड़ते हैं, जिनमें हेलीपोर्ट और जल एरोड्रोम शामिल हैं और 80 लाख से अधिक लोग इस से लाभान्वित हुए हैं। उड़ान योजना से पूरे भारत के क्षेत्रों सहित पहाड़ी राज्यों, पूर्वोत्तर क्षेत्र और द्वीपों को काफी लाभ हुआ है।

विमान के आकार वाली झाँकी का अग्र भाग, महिला पायलटों को प्रदर्शित करता है जो भारत के विमानन क्षेत्र में महिला शक्ति को दर्शाता है, क्योंकि विश्वस्तर पर महिला व्यावसायिक पायलटों के सन्दर्भ में भारत का स्थान सबसे ऊपर है। झाँकी के पीछे के हिस्से में बौद्धधर्म का प्रतीक और उड़ान-‘सब उड़ें, सब जुड़ें’ का आदर्श वाक्य दिखाया गया है। मध्यभाग में उड़ान योजना के माध्यम से जुड़े बुद्ध सर्किट के अंतर्गत, गया में बुद्ध की प्रतिमा, जहां उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया, धमेख स्तूप, सारनाथ जहां उन्होंने अपना पहला उपदेश (धर्मचक्र परिवर्तन) दिया और महापरिनिर्वाण स्तूप, कुशीनगर जहां उन्होंने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया, को प्रदर्शित किया गया है। झाँकी के मध्यभाग के दोनों ओर केंद्र में बुद्ध की हस्तयोग मुद्रा और हस्तयोग मुद्रा के दोनों ओर देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित भारत के दो-दो विश्व धरोहर स्थलों को दर्शाया गया है।

—नागर विमानन मंत्रालय

UDAN - UDE DESH KA AAM NAGRIK

The tableau of Ministry of Civil Aviation showcases Regional Connectivity Scheme (RCS) - UDAN (Ude Desh Ka Aam Nagrik) and the rich dividends it has been yielding. Conceptualized by the Ministry and implemented by Airport Authority of India (AAI), the scheme has the objective of enhancing regional connectivity in an economically sustainable and affordable manner.

Launched in 2016, it aims to enhance aviation infrastructure and air connectivity in tier II and III cities fulfilling the aspirations of the common man. The first UDAN flight was flagged-off in 2017 at Shimla by Hon'ble Prime Minister. Today, 403 UDAN routes connect 65 underserved/unserved airports, including heliports and water aerodromes, and over 80 lakh people have benefited from it. UDAN scheme has immensely benefitted several sectors pan-India including Hilly States, North-Eastern region and Islands.

In the aircraft shaped tableau, the front part showcases women pilots depicting women power in India's aviation, as India tops in women commercial pilots, globally. The rear portion of the tableau shows symbol of Buddhism and motto of UDAN- 'Sab Uden, Sab Juden'. The middle portion showcases Buddha circuit connected through Udan Scheme, featuring, Buddha Statue at Gaya where He attained enlightenment, Dhamekh Stupa, Sarnath where He delivered his first sermon (Dharmachakra Parivartan) and the Mahaparinirvana Stupa, Kushinagar where He attained Mahaparinirvana. Both sides of the middle portion of the tableau depict Palm Yoga Mudras of Buddha in the centre and world heritage sites of India situated in different regions of the country, two each on either side of the Palm Yoga Mudra.

- MINISTRY OF CIVIL AVIATION





सीआरपीएफ: शौर्य एवं बलिदान की गाथा

सीआरपीएफ (गृह मंत्रालय) की झाँकी इसके पराक्रम, बलिदान और गौरवशाली इतिहास की गाथा को दर्शाती है। 27 जुलाई, 1939 को क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस के रूप में स्थापित इस बल को 28 दिसम्बर, 1949 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के रूप में पुनः अभिनव नाम दिया गया। 19 मार्च, 1950 को सीआरपीएफ को 'राष्ट्रपति का ध्वज' प्रदान किया गया।

झाँकी का अग्र भाग, सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा सीआरपीएफ को 'राष्ट्रपति का ध्वज' प्रदान किए गए समारोह को दर्शाता है। इसके पीछे सीआरपीएफ की टुकड़ियों द्वारा संरक्षित ईवीएम, नोडल बल होने के नाते निष्पक्ष चुनाव आयोजन के माध्यम से लोकतांत्रिक प्रक्रिया के रक्षण को दर्शाती है। मध्य भाग शहीदों का श्रद्धांजलि देते हुए हॉट स्प्रिंग्स (लद्दाख) स्मारक को दर्शाता है। 21.10.1959 को हॉट स्प्रिंग्स (लद्दाख) में चीनी सेना द्वारा सीआरपीएफ के एक छोटे से गश्ती दल पर घात लगाकर हमला किया जिसमें बल के दस जवानों ने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया। इस शहादत को पूरे देश में प्रत्येक वर्ष "पुलिस स्मृति दिवस" के रूप में मनाया जाता है। अंतिम भाग कच्छ के रण, गुजरात में "सरदार पोस्ट की लड़ाई" को दर्शाता है जहाँ 6 वीरों ने प्राणों की आहुति दी। 09 अप्रैल, 1965 को सीआरपीएफ की द्वितीय बटालियन की दो कंपनियों ने सरदार पोस्ट पर पाकिस्तानी ब्रिगेड के हमले को नाकाम कर उनके 34 सैनिकों को मार गिराया और 4 को ज़िंदा पकड़ लिया था। सेना युद्धों के इतिहास में पुलिस बल द्वारा एक पूर्ण इंफैंट्री ब्रिगेड का इस प्रकार प्रतिकार पहले नहीं हुआ था। सम्मान स्वरूप इस दिन को 'शौर्य दिवस' के रूप में मनाया जाता है। झाँकी के दोनों ओर कोबरा, आरएएफ और सीआरपीएफ के वीआईपी सिक्योरिटी विंग के जवानों के पुतले प्रदर्शित किए गए हैं और पूर्वोत्तर में एक पोलिंग बूथ पर ड्यूटी, पेंगोंग झील का मनोरम दृश्य और एल डब्ल्यू ई प्रभावित क्षेत्र में 'जंगल ऑपरेशन' का शानदार चित्रण किया गया है। झाँकी के साथ-साथ सीआरपीएफ के वीर जवान आकर्षक मार्चिंग करते अपने कर्तव्यों की प्रतिबद्धता को परिलक्षित करते हुए दक्ष एवं उत्कृष्ट कार्यशैली को दर्शाते हैं।

— केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

CRPF: SAGA OF VALOUR AND SACRIFICE

The Tableau of CRPF (MHA) showcases saga of its valour, sacrifices and glorious history. Established as Crown Representative's Police on 27th July 1939, it was rechristened as the Central Reserve Police Force on 28th December 1949. The "President's Colour" was presented to CRPF on 19th March 1950.

The front of the tableau depicts presentation ceremony of 'President's colour' to CRPF by Sardar Vallabh Bhai Patel. Behind that EVM guarded by CRPF troops represents its crucial role as a nodal force, in safe guarding the democratic process by conduct of fair elections. The middle portion depicts paying homage to the Martyrs at the Hot Spring Memorial in Ladakh. On 21.10.1959, a small CRPF patrol of 10 personnel made sacrifice in an ambush by the Chinese Army (PLA) at Hot Spring in Ladakh. Every year, this day is remembered as 'Police Commemoration Day' throughout the country. The end part depicts the battle of 'Sardar Post' in Rann of Kutch, Gujarat where six brave hearts attained martyrdom. On April 9, 1965, two companies of 2nd Battalion of CRPF, repulsed attack by Pakistani Brigade on Sardar Post killing 34 Pakistani soldiers and captured 04 alive. Never in the history of military battles, a handful of policemen fought back a full-fledged infantry brigade in such a great manner. As a tribute, this day is celebrated as "Valour Day". On the sides, tableau displays mannequins of personnel of CoBRA, RAF and VIP Security Wing; view of polling booth duty in North East; Panoramic view of Pangang Lake and a spectacular depiction of Jungle Operations in LWE area. The graceful marching by the CRPF Jawans alongside showcases the stride of CRPF with professional excellence towards its commitment to the nation.

- CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

जल जीवन मिशन: बनाएँ जीवन आसान

पेयजल एवं स्वच्छता विभाग अपनी झाँकी “जल जीवन मिशन: बनाएँ जीवन आसान” के विषय पर प्रस्तुत करता है।

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दिनांक 15 अगस्त, 2019 को घोषित ‘जल जीवन मिशन’ का उद्देश्य वर्ष 2024 तक देश के प्रत्येक गाँव के हर घर में नल से शुद्ध पेयजल पहुंचाना है, ताकि महिलाओं को पानी ढोकर लाने की सदियों पुरानी मजबूरी से मुक्ति मिले, और सभी लोगों का जीवन सुगम बने। घोषणा के समय केवल 3.23 करोड़ (17%) घरों में ही नल से जल उपलब्ध था। कोविड महामारी के बावजूद केवल 29 महीनों में अब 8.8 करोड़ (46%) ग्रामीण घरों, 8.4 लाख (82%) विद्यालयों और 8.6 लाख (87%) आंगनवाड़ी केन्द्रों में नल से शुद्ध जल मिल रहा है।

झाँकी के अग्र-भाग में गौरवमय बूंद ‘हर घर जल’ की सफलता और सम्पूर्ण ग्रामीण जल आपूर्ति व्यवस्था का स्वामित्व स्थानीय समुदाय के पास होने का परिचायक है। मध्य-भाग में लड़ाख के सुदूर, सीमावर्ती गाँव के लोगों को अपने घरों, विद्यालयों और आंगनवाड़ी केन्द्रों में नल से जल की सुविधा का आनंद उठाते हुए दर्शाया गया है। प्रशिक्षित स्थानीय महिलाएं फील्ड टेस्ट किट्स की मदद से जल गुणवत्ता जांच करती दिख रही हैं। झाँकी के पृष्ठ-भाग में दर्शाया गया है कि 13,000 फुट की ऊँचाई पर सदियों में तापमान -20 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाने से जब जल-स्रोत जम जाते हैं, सप्लाई लाइनें निष्क्रिय हो जाती हैं, पाइप फट जाते हैं और सामान की सप्लाई ठप्प सी हो जाती है, तब किस तरह पशुओं और हेलिकॉप्टरों की मदद से निर्माण-सामग्री पहुंचाई जाती है। जमे हुए जल-स्रोतों से पानी निकालने की तकनीकी चुनौती को भी दर्शाया गया है। मुख्य जल आपूर्ति लाइनों को फ्रॉस्ट-लाइन से नीचे बिछाया जाता है, ताकि उनमें पानी जमने न पाए। जहाँ कहीं भी पाइप फ्रॉस्ट-लाइन से ऊपर ले जाने पड़ते हैं, वहाँ उन्हें ग्लास-वूल, बुरादे और एल्युमीनियम से बनी 4 इंच मोटाई की स्पेशल-इंसुलेशन से ढका जाता है। सौर-ऊर्जा की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है, ताकि पाइपलाइन में जल प्रवाह बना रहे।

—पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, जल शक्ति मंत्रालय

JAL JEEVAN MISSION: CHANGING LIVES

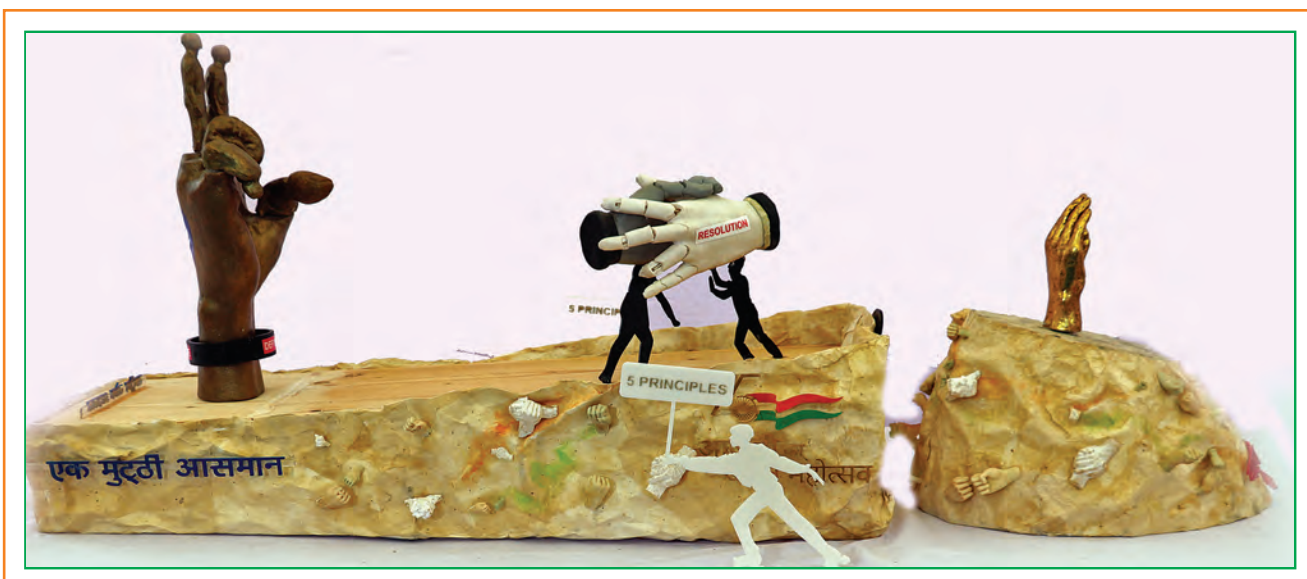
Department of Drinking Water and Sanitation presents its tableau on the theme “Jal Jeevan Mission : Changing Lives”.

Jal Jeevan Mission was announced by the Hon’ble Prime Minister on 15th August, 2019 to remove centuries old drudgery faced by women and children in fetching water and improve the quality of life in rural India, with a resolve to provide tap water supply to every home by 2024. At that time only 3.23 Crore (17%) homes had tap water supply. In just 29 months, despite Covid-19 pandemic and disruptions, more than 8.8 Crore (46%) rural homes, 8.4 lakh (82%) schools and 8.6 lakh (87%) anganwadi centres are now getting clean tap water supply.

Proud droplet at the front of the tableau depicts achievement of ‘Har Ghar Jal’ and community ownership of the village water supply. Middle section showcases the joy of community in remote, border villages in Ladakh, now getting clean tap water in the comfort of their homes, schools and anganwadies. Trained local women are conducting water quality test by using Field Test Kits. The rear part depicts that when in winters, at an altitude of 13,000 ft, temperature falls to minus 20C, water sources get frozen, supply lines become inoperative, pipes burst, and supply of materials is affected badly, how with the help of animals & helicopters construction material is lifted and transported. This part also depicts technical challenges to draw water from frozen water sources. Due to freezing temperatures, main water supply lines are laid below frost line. Wherever pipes come above the frost line, these are encased in 4" diameter of glass wool, wood, aluminium jacketing for insulation. Solar power plays an integral part to ensure continuous flow of water in the pipe line.

- DEPTT. OF DRINKING WATER AND
SANITATION, MINISTRY OF JAL SHAKTI





एक मुट्ठी आसमा : लोक अदालत, समावेशी न्याय व्यवस्था

‘एक मुट्ठी आसमा’ विषय पर विधि एवं न्याय मंत्रालय की झाँकी, गरीबों तथा समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों के लिए भरोसा, दृढ़ निश्चय तथा आशा का प्रतीक है।

विधिक सेवा प्राधिकरणों का गठन समाज के कमजोर वर्गों को मुफ्त एवं सक्षम विधिक सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिए किया गया है ताकि आर्थिक या किसी भी अन्य कारणों से कोई भी नागरिक न्याय पाने से वंचित न रहे तथा लोक अदालत का आयोजन करने के लिए किया गया है, जिससे कि न्यायिक प्रणाली समान अवसर के आधार पर सबके लिये न्याय सुगम बना सके। लोक अदालत कानूनी विवादों का सुलह की भावना से न्यायालय से बाहर समाधान करने के लिये वैकल्पिक विवाद निपटान का अभिनव तथा सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम है, जहाँ आपसी समझ-बूझ से विवादों का समाधान किया जाता है। लोक अदालत सरल एवं अनौपचारिक प्रक्रिया को अपनाती है तथा विवादों का अविलम्ब निपटारा करती है एवं इसमें पक्षकारों को कोई शुल्क भी नहीं लगता है। लोक अदालत से न्यायालय में लंबित मामले का निपटान होने पर, पहले से भुगतान किये गये अदालती शुल्क को भी वापस कर दिया जाता है। लोक अदालत का आदेश/फैसला अंतिम होता है जिसके खिलाफ अपील नहीं की जा सकती। लोक अदालत से मामले के निपटारे के बाद उनमें निर्णय से पूर्ण संतुष्टि की भावना रहती है क्योंकि इसमें कोई भी पक्ष जीतता या हारता नहीं है। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण ने जन-जन के दर तक न्याय की इस तीव्रतर प्रणाली को पहुँचाया है और अदालतों का बोझ बड़े पैमाने पर घटाया है। 2021 में आयोजित की गई राष्ट्रीय लोक अदालतों में, 125 लाख से ज्यादा मामलों का निपटान किया गया है।

झाँकी का अग्रभाग ‘न्याय सबके लिए’ को प्रतिबिम्बित करता है, जो कि भयमुक्तता, भरोसा तथा सुरक्षा का द्योतक है। झाँकी के पश्च भाग में, एक हाथ की पाँचों उँगलियाँ खुलती हुई दिखाई पड़ रही हैं, जो लोक अदालतों के पाँच मार्ग दर्शक सिद्धांतों को दर्शाती हैं—सब के लिए सुगम्यता, निश्चयात्मकता, सुलभता, न्यायसंगतता तथा शीघ्र न्याय।

—विधि और न्याय मंत्रालय

EK MUTTHI AASMAA : LOK ADALAT, INCLUSIVE LEGAL SYSTEM

The theme of tableau of Ministry of Law and Justice “**Ek Mutthi Aasmaa**” is symbol of reassurance, determination and optimism for poor and marginalized sections of the society.

The Legal Services Authorities are constituted for providing competent legal services to the weaker sections of the society to ensure that opportunities for securing justice are not denied to any citizen by reason of economic or other disabilities and to organize Lok Adalats to ensure that the operation of the legal system promotes justice on a basis of equal opportunity. Lok Adalat is an innovative and most popular mechanism for Alternative Dispute Resolution to resolve legal disputes in a spirit of conciliation outside the Court. Lok Adalat follows a simple & informal procedure and resolves a case within no time, moreover no court fee is required to be paid by the parties. Any court fee, if already paid in a pending court matter is also refunded, in case of settlement in the Lok Adalat. The order/Award of Lok Adalat is final & non-appealable. In the end, the parties have a sense of satisfaction as neither of them wins nor loses. National Legal Services Authority (NALSA) has reached the doorsteps of the common citizens in providing speedier system of justice thus contributed largely in reducing the burden of the courts. During the National Lok Adalats organized in 2021, more than 125 lakhs cases were settled by the Lok Adalats.

The front part of the tableau showcases ‘*Nyay Sbke Liye*’, a hand gesture of fearlessness, guarantee and protection. In the rear part, a hand can be seen opening its five fingers one by one, depicting five guiding principles of Lok Adalats i.e., Accessible, Definitive, Affordable, Equitable, and Timely Justice for all.

- MINISTRY OF LAW AND JUSTICE

सुभाष @125

इस वर्ष केंद्रीय लोक निर्माण विभाग की झाँकी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 125वीं जयंती के अवसर पर उनके नेतृत्व वाली इंडियन नेशनल आर्मी के शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित कर रही है।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने 1943 में इंडियन नेशनल आर्मी (आईएनए), जिसे 'आजाद हिंद फौज' के नाम से जाना जाता है, को पुनर्जीवित किया। भारत के विख्यात क्रांतिकारी; नेताजी ने भारत को आजाद कराने के लिए अपना खून और पसीना बहाया और उनके शब्द "यह खून ही है जो आजादी की कीमत चुका सकता है। तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा" तथा "आजादी दी नहीं जाती, ली जाती है" ने हमेशा लाखों लोगों को प्रेरित किया।

झाँकी के सामने के हिस्से में नेताजी की भव्य प्रतिमा को सलामी मुद्रा में दर्शाया गया है। मोइरंग युद्ध का ऐतिहासिक अवसर जहां 14 अप्रैल 1944 की सुबह इंडियन नेशनल आर्मी द्वारा पहली बार भारतीय धरती पर तिरंगा फहराया जा रहा है को झाँकी के पीछे के हिस्से में दिखाया गया है। झाँकी के मध्य भाग में स्वतंत्रता से जुड़े धर्मयोद्धाओं के चित्र दर्शाये गये हैं। झाँकी के दोनों तरफ 'आजादी का अमृत महोत्सव' प्रदर्शित किया गया है। आंखों को सुकून देने वाले अनुभव को स्थापित करने के लिए पूरी झाँकी को पुष्पों के प्राकृतिक, जीवंत रंगों से तैयार किया गया है।

— केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग

SUBHASH @125

This year Central Public Works Department (CPWD) tableau is presenting floral tribute to the martyrs of Indian National Army led by Netaji Subhash Chandra Bose on the occasion of his 125th birth anniversary.

Netaji Subhash Chandra Bose revived the Indian National Army (INA), popularly known as 'Azad Hind Fauj' in 1943. India's distinguished revolutionary, Netaji gave his sweat and blood to free India and his words "It is blood alone that can pay the price of freedom. Give me blood and I will give you freedom" and "Freedom is not given, it is taken" always inspired millions.

The front portion of the tableau is depicting bust of Netaji in saluting pose. Historical occasion of Moirang war, where the tricolour is being hoisted by Indian National Army for the 1st time on Indian soil in the morning of 14th April 1944, has been shown in rear portion of the tableau. The portraits of crusaders associated with the freedom are shown in the middle portion of the tableau. 'Azadi ka Amrit Mahotsav' has been shown on the sides of tableau. The entire tableau has been crafted in flowers in their natural, vibrant colour to establish eye pleasing experience.

- CENTRAL PUBLIC WORKS DEPARTMENT



वंदे भारतम्, नृत्य उत्सव

देश की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी के अमृत महोत्सव के एक भाग के तौर पर रक्षा मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय ने वंदे भारतम्, नृत्य उत्सव शुरू करने की घोषणा की। भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी के अमृत महोत्सव के एक भाग के तौर पर अखिल भारतीय नृत्य प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य देश भर से उच्च नृत्य प्रतिभाओं का चयन करना एवं इन्हें गणतंत्र दिवस परेड 2022 के दौरान प्रस्तुति करने का अवसर उपलब्ध कराना था। यह पहली बार है कि अखिल भारतीय नृत्य उत्सव के माध्यम से चयनित सर्वश्रेष्ठ नृत्य समूह गणतंत्र दिवस परेड में अपनी प्रस्तुति दे रहे हैं।

जिले स्तर पर 17 नवंबर, 2021 को प्रारंभ इस प्रतियोगिता में 323 समूहों में 3870 प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया। जिले स्तर का अंतिम दौर कोलकाता, बंगलुरु, मुंबई और दिल्ली में 09 से 12 दिसंबर 2021 तक संपन्न किया गया। इसमें 104 समूहों ने अपने नृत्य कौशल का माननीय निर्णायक मंडल एवं प्रशंसकों के सामने प्रदर्शन किया।

फिर 104 समूहों में से चार क्षेत्रों के 949 नर्तकों वाले 73 समूहों ने 19 दिसंबर, 2021 में दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित अंतिम दौर या ग्रांड फिनाले में भाग लिया। इस अंतिम दौर में निर्णायक मंडल ने गणतंत्र दिवस परेड 2022 में नृत्य कौशल प्रदर्शन के लिए 15 राज्यों से (485 नर्तक) की 36 टीमों का चयन किया और वे आज गणतंत्र दिवस समारोह में अपनी प्रस्तुति दे रहे हैं।

भारत की संगीतात्मक प्रस्तुति में यहाँ की एकता और विविधता को अत्याधिक ऊर्जा और खूबसूरती के साथ दर्शाया जा रहा है। यहाँ परंपरा का मेल आधुनिकता से, लोक कला का मेल समकालीन से, लोकप्रिय का अनन्वेषित से मेल शैली और लय के आदान-प्रदान के माध्यम से हो रहा है।

यहाँ मौजूद कलाकार शास्त्रीय, लोक/आदिवासी, समकालीन एवं ग्रांड फिनाले को शामिल करते हुए चार सेगमेंट्स में परफार्म कर रहे हैं। इस वाद्य वृंद रचना की भव्यता को बढ़ाने में विशाल प्रॉप्स, मुखौटे, कठपुतली, परिधान बहुत अहम हैं।

— समन्वय द्वारा संस्कृति मंत्रालय

VANDE BHARATAM, NRITYA UTSAV

The Ministry of Defence and the Ministry of Culture had announced the launch of 'Vande Bharatam-Nritya Utsav', an All-India dance competition as part of Azadi Ka Amrit Mahotsav to commemorate 75 years of independence of India. The prime objective of this competition was to select the top dancing talent from across the country and provide them the opportunity to perform during the Republic Day Parade 2022. It is for the first time that dance groups to perform in a Republic Day parade were chosen based on all India level competition.

The Vande Bharatam competition began at the district level on 17 November 2021 and saw the participation of more than 3,870 contestants in 323 groups. The zonal finals happened at Kolkata, Mumbai, Bengaluru, and Delhi from 9th to 12th of December 2021 where 104 groups displayed their dance prowess before an august Jury and applauding fans.

Of these 104 groups, 73 groups comprising 949 dancers from all 4 zones made it to the Grand Finale, which was held at the Jawaharlal Nehru Stadium, Delhi on 19th of December 2021. In the finale, 36 teams (485 dancers) from 15 states got nod of the esteemed Jury, to perform at the cultural program at the Republic Day Parade at Rajpath on 26th January 2022.

The musical representation of India showcases its unity and diversity in the most colourful spirit and energy where traditional meets modern, folk meets contemporary, popular meets unexplored in melting pot of styles and rhythms.

The artistes perform four segments to include Classical, Folk/Tribal, Contemporary and the 'Grand Finale'. The huge props, masks, puppets and fabric add to the splendor of the symphony.

- CO-ORDINATED BY MINISTRY OF CULTURE